पंचम अध्याय

'इदन्नमम' में पात्रसृष्टी

पंचम् अध्याय
'इदन्नमम' में पात्रसृष्टी

आँचलिक उपन्यास और उसके पात्र :- आँचलिक उपन्यासों में आँचलिक जीवन के अर्न्त-बाह्य पक्ष को उद्‌घाटित करने के लिये अँचल विशेषता को लेकर जीनेवाले स्थानिय पात्रो का निर्माण करना आवश्यक होता है। जिसके माध्यम से अँचल के व्यक्तित्व का समग्र अंकन उपन्यासकार प्रस्तुत करता है। इसलिए आँचलिक उपन्यास के पात्रों के चारित्रिक विन्यास में आँचलिक रंग उद्दीपन के रूप में काम करते हुए अँचल विशेष के चारित्रिक गुणों की सर्जना करते है। जिसमें अँचल विशेष की छाप दृष्टव्य होती है। अँचल का चित्रण करते समय लेखक अलग-अलग दिशाओं, अलग-अलग वर्गो से पात्रों कों उठाकर अँचल की समग्रता को प्रस्तुत करता है। जिस कारण आँचलिक उपन्यासों में पात्रों की बहुलता होती है।

आँचलिक उपन्यासों में पात्र वस्तुपरक होते हुए भी लेखकीय संवेदना लेकर प्रस्तुत होते है। 'इदन्नमम' में भी सभी पात्र अँचल विशेष के जीवन और संस्कृती को लेकर उभरते है। और अँचल के यथार्थ जीवन को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते है। 'इदन्नमम' में भी 'मंदा' यह पात्र अँचल की परिस्थिती से निर्माण होकर विकसित हुआ है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में मंदा, बऊ, दादा पंचमसिंह, मकरन्द, कुसुमाभाभी, प्रेम, सगुणा, टीकमसिंह, डब्बल-बब्बा आदि है। अभिलाख, गोविन्दसिंह, जगेसर आदि प्रतिनायक है।

उपन्यास में पात्रों की बहुलता है, परंतु प्रत्येक पात्र कथाविन्यास में अपनी भूमिका लेकर अँचल की समस्या, गुण आदि का बयान देते हुये, कथा के विकास मे सहाय्यता करता है। मंदा, पंचमसिंह, बऊ, मकरन्द, टिकमसिंह, अभिलाख, कुसुमाभाभी आदि पात्रों को विस्तृतता प्रदान की है। प्रेम, अमरसिंह, मिठूकाका, पप्पू, प्रधान, सगुणा, गोविन्दसिंह, डॉ. इन्द्रनील, भृगुदेव आदि पात्र भी आँचलिक रंगों को उभारने के लिये आवश्यक है। 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने वर्णनात्मक शैली की बहुलता का प्रयोग करते हुये भी पात्रों की विशेषताओं को उजागर करना लेखिका का उद्देश्य रहा दिखाई देता है।

अ) स्त्री पात्र 5.1 नायिका 'मंदा' – 'मंदा' 'इदन्नमम' उपन्यास का केंद्रीय पात्र है, आज भूमण्डींलिकरण के दौर में ग्रामीण अँचल में बदलते 'स्त्री' रूप और उसके संघर्षरत

जीवन को लेकर उभरती है। 'बुंदेलखण्ड' अँचल के सामाजिक, आर्थिक वैषम्यों में जीनेवाली मंदा अपने सोनपुरा गाँव में परिवर्तन लाना चाहती है। परंपरासे चलते आये सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक ढँकोसलों को वह ढहा देना चाहती है। 'मंदा' एक प्रगतिशील, पुरोगामी विचारों का पात्र है, जो समाज में चलते अन्याय-अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाती, समाज के लिये नयी राह निर्माण करनेवाली स्त्री पात्र है। जिसके बारे में डॉ. गोपालराय कहते है - ''इदन्नमम'' की मंदाकिनी वास्तविक अर्थों में एक जुझारू युवती है, जो केवल परिवार और समजाद्वारा अपने लिए निर्मित बंधनों को नहीं तोड़ती वरन् उस शोषण के विरुध्द भी तनकर खड़ी होती है, जो आज के नेताओं और माफिया ठेकेदारों द्वारा आदिवासियों और ग्रामीणों पर कहर के रूप मे बरसा जा रहा है।''[1] 'इदन्नमम' की मंदा एक जुझारु नेतृत्व है जो 'बुण्देलखण्ड' अँचल की ग्रामीण चेतना को सामुदायिक भावना और नारी जागरण का प्रतिनिधित्व स्वर बनकर पाठकों के सामने नायिका के रूप में खड़ी हो जाती है जिसकी निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताएँ है।

5.1.1) अल्हड़ बालिका :-

'इदन्नमम' उपन्यास में मंदा प्रथमत: एक अल्हड़ बालिका के रूप में प्रस्तुत होती है। तेरह वर्ष की मंदा जब अपनी दादी बऊ के साथ श्यामली गाँव आती है। तो उसका बचपन दादा पंचमसिंह की पनाह में बीतता जरूर है परंतु माँ 'प्रेम' के केस दायर करने और पुलीस उत्पीड़न से बचने के लिये उसे हमेशा छिपाकर रखा जाता है। परिणाम स्वरूप उसका बचपन सीकुडकर रहता है। अन्य बच्चों की तरह वह खेल-कुद भी नही सकती। मन में खेलने की ललक लेकर वह मकरंद के पास खेलने चली जाती है। तब मकरन्द उसके साथ खेलने, बात करने से इन्कार कर देता है। ''मकरन्द को भीतर जाते हुए देखती रही। मन उदास हो गया। बैठे-बैठे देर हो गयी। सोचते-सोचते हलकन..... सच ही तो कह रहे हैं मकरन्द। एकदम सच। बुरा क्यों लगा उसे ? किसी बालक पर है उसके जैसा पहरा? पड़े हैं किसी के पीछे सिपाही? किसी की अम्मा इसतर तरह गयी हैं अपनी बच्चे को छोड़कर? वह खेलने-कुदनेवाली बिरादरी से इसी कारण काटकर फेंक दी गयी है। इसी कारण अछूत

---

1) डॉ. उषा यादव, 'हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. - 1999, पृ. 260

और बेमेल है वह।''[1] मंदा बचपन से ही पिता महेंन्दर की हत्या और माँ 'प्रेम' का जीजा रतन यादव के साथ भाग जाने की बाते सुनती आई है। फिर भी माँ के प्रति उसके मन में लगाव है जिस कारण वह बऊ से कहती है। ''मैं लिबा लाऊँगी अम्मा को.... अम्मा को लिबा लाऊँगी मैं।''[2] माँ-बाप के प्यार से वंचित मंदा बचपन से ही स्नेह की प्यासी है। वह मकरंद से दोस्ती बना लेती है। चीफ साहब की बहन अन्वरी बुआ के गाँव समथर जाने पर वहाँ भी वह शकील से दोस्ती करती है। रक्षाबंधन पर शकील को राखी बाँधती है । और वह उसे कपड़ों का पाकीट भेट देता है। मंदा के हठ को अन्वरी बुआ और शकील पुरा करते है। वह उसके साथ 'भुँजरियाँ' मनाते है। उसे अपने गाँव माँ के साथ बिताये क्षण और सहेली सगुणा की याद बार-बार आती है। फिर भी पुलीस के उत्पीड़न के कारण भटकती रही मंदा का अल्हड़ बचपन खो जाता है। और वह छोटी उम्र में ही प्रौढ़ा बन जाती है।

5.1.2) सामान्य रंगरूप की नारी 'मंदा' -

'मंदा' एक सामान्य रंगरूप की लड़की है। फिर भी उसके नाक-नक्शे अच्छे रहने के कारण वह सुंदर लगती है। 'श्यामली' की देवगढ़वारी कक्कों ''वे देखती रहीं बच्ची की आँखे कजरारी घनी लम्बी बरौनियों वाली हैं, जिन्हें वह पटर - पटर झपका रही है। खानेवाला मुँह छोटा है, ऊपर का होंठ धनुष की तरह कटावदार और ललामी लिए हुए। मुख पर झलकती उम्र के मुकाबले कद लम्बा है। टेढ़ी माँग निकालकर बाल सँवारे हैं। और एक लट अंडे की सी बनगतवाले चेहरे पर बार-बार झूल जाती है। जिसको सिर झटककर वह पीछे कर लेती है।''[3] मैत्रेयी ने अपने उपन्यासों की नायिकाओं को सामान्य रंग रूप में चित्रित करते हुए परंपरा से चली आई स्त्री के श्रृंगारीक रूप का खण्डन किया है। वह कहती है - ''मेरी मान्यता साहित्य की परंपरा को देखते हुए यह भी बन गई थी कि खिले हुए मृदुल अंगोवाली स्त्री का विशेष महत्व है। उसके साथ पाठक सघन लगाव से जुड़ता है और पुरुष को बहुत प्रिय होती है, उसके दुख से वह पिघल उठता है।''[4] अपने सौंदर्य से सहानुभूती प्राप्त करे ऐसी नायिका मैत्रेयी को अभिप्रेत नही है। उन्होंने अपने प्रत्येक

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ.41
2) वही पृ. 42
3) वही पृ. 12
4) मैत्रेयी पुष्पा, 'कथा साहित्य में सती पूजा', 'हंस' पत्रिका, जुलाई 2004. पृ. 35

उपन्यास की नायिका को सामान्य रंग रूप में चित्रित किया है। उसके बाह्य अंग का चित्रण कतई दृष्टव्य नहीं है। तो अपने कर्तृत्व से वह अपना प्रभाव छोड़ती नजर आती है। 'मंदा' के रूप के बारे में मकरन्द की माँ कहती है - ''हमारा तो जी चैन में नही है। अच्छा, यह बताओ कि मकरन्द की उमर सादी-ब्याह की है? और मोंड़ी, वो मकरन्द से भी बड़ी लगती है। मेमना की तरह लगता हैं। मोड़ा 'मंदा' के सामने .... ऊँट के गरे बकरी न बाँधो।''[1] मैत्रेयी ने मन्दा को सामान्य रंग रूप की दिखलाकर यह बात स्पष्ट की है कि स्त्री अपने सौंदर्य से नहीं तो अपने आचार-विचारों से अपना स्थान निर्माण करती है।

5.1.3) अल्पशिक्षित 'मंदा' –

'मंदा' ने अपने गाँव में पाँचवी कक्षा तक शिक्षा हासिल की है। श्यामली गाँव आने पर प्रकाश, मकरन्द को स्कूल जाते देखकर आगे की शिक्षा हासिल करने की प्रबल इच्छा उसके मन में जागृत हो जाती है। बऊ के मना करने पर भी वह मकरंद से पुस्तक मँगवाकर घर में ही पढ़ती रहती है। पढ़ने की ललक के कारण वह हमेशा रामायण भी पढ़ती रहती है। शिक्षा का महत्व जाननेवाली 'मंदा' अपने गाँव सोनपुरा आने पर वहाँ हायस्कूल खोलने की बात गाँववालों से करती है। साथ ही राऊत मजदूरों के बच्चों को नशापान से दूर रखने के लिये उन्हें स्कूल भेजने के लिय प्रयत्नशील रहती है। भृगुदेव से डॉक्टरी की शिक्षा अधुरी छोड़ने की कहानी सुनने पर उसे आगे की शिक्षा हासिल करने के लिये प्रेरणा देती है। इस तरह अल्प शिक्षित होकर भी 'मंदा' शिक्षा का महत्व जाननेवाली स्त्री है।

5.1.4) प्रेमिका 'मंदा' :-

'श्यामली' गाँव में पनाह पाई 'मंदा' की 'मकरन्द' से दोस्ती हो जाती है। और समय के साथ दोस्ती प्रेम में बदल जाती है। दोनों एक-दूसरे को चाहने लगते है। जब 'गोविन्दसिंह' घर के किसी लड़के से 'मंदा' की शादी करने की बात दादा पंचमसिंह से करते है। तब वह 'मंदा' और 'मकरन्द' के बीच के स्नेह को देखकर उनकी सगाई कर देते है। 'मंदा' की माँ प्रेम के केस वापिस लेने पर और दादा पंचमसिंह के घर के बढ़ते संघर्ष में 'मंदा' की सगाई टूट जाती है। 'मंदा' सोनपुरा लौटने पर भी मकरन्द को भूल नही पाती। उसे आशा है कि एक न एक दिन मकरन्द डॉक्टर बनकर सोनपुरा आयेगा और अपना वचन

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ.134

निभायेगा। मकरन्द और 'मंदा' के बीच पत्रव्यवहार चलता रहता है। मकरन्द हमेशा 'मंदा' को एक सच्चे प्रेमी के रूप में साथ देकर 'मंदा' को कार्य करने की प्रेरणा देता रहता है। और 'मंदा' भी मकरन्द का विश्वास आधार पाकर जीवन संघर्ष से दो हाथ करती चलती है - ''तुम्हारी बेचैनी तुम्हारा प्यार ही जीवित रखे है मुझे। उसी प्रेम की दिव्य दृष्टि तुम्हारा दर्शन तुम्हारा परस कराती है दिन-रात। कोरा कागज भी भेजते तो मैं पढ़ लेती हरफ-हरफ। समझ लेती एक-एक भाव। आज भी समझ रही हूँ, स्याही से उकेरकर लिखा है वह भी और लिखावट निपट अकेली के साथ-साथ रहते हो, हर पल हर स्थान पर।''[1] 'मंदा' मकरंद को हमेशा साथ पाती है। 'प्रेम' मनुष्य जीवन में कार्यरत रहने के लिए प्रेरणा देता है; 'प्रेम' के कारण ही मनुष्य जीवन की कठिनाइयों का सहजता से सामना करता है। चाहे वह प्रेम 'प्रेमी-प्रेमिका', 'माँ-बाप,' 'भाई-बहन' का हो, मनुष्य प्रेम के सहारे ही जीवन संघर्ष को झेलता है। 'मंदा' मकरन्द के साथ बिताये क्षण याद करती है। ''एका एक मकरन्द ने अपनी बाँहो के घेरे में ले लिया उसे। वह चौंक गयी। कसमसाने लगी। ''रह ली हमारे बिना?'' अपनी छाती से उसे चिपकाकर पूछ रहे थे मकरन्द।''[2] विवाह के पूर्व ही शारिरीक लगाव प्रेमी-प्रेमिकाओं को बाँधे रखता है, जो मैत्रेयी पुष्पा 'प्रेम' के संबंध में कहती है। ''मैंने अपनीं नायिकाओं को प्रेम के मामले में पुरी छूट दी है। क्यों कि प्रेम करना नैसर्गिक प्रवृत्ति में आता है। जिसमें धूर्तता का लेश मात्र भी नहीं होता। यदि छल, कपट, चालाकी और धूर्तता होगी तो निश्चित ही वह व्यभिचार होगा।''[3] 'मंदा' और मकरंद का प्रेम भी सच्चाई के नींव पर खड़ा है। उसमें छल, कपट नहीं है। इसलिए 'मंदा' और मकरन्द का प्रेम व्यभिचार नही तो उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। प्रेमी और प्रेमिका को नर-मादी के रूप में रखते हुए उनके नैसर्गिक अधिकार को प्राप्त कराने वाले रूप में मैत्रेयी ने अपने नायक-नायिकाओं का चित्रण किया है। 'इदन्नमम' में 'मंदा' को मकरन्द अंधेरे जीवन में रास्ता दिखानेवाला दीपस्तंभ लगता है।

5.1.5) शोषित नारी -

रतन यादव से 'मंदा' को सुरक्षित रखने के लिए दादा पंचमसिंह 'मंदा' को ओरछा की गढ़ी में छिपा रखते है। वहाँ से लौटते वक्त 'मंदा' को यशपाल की दुसरी पत्नी का

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ.222
2) मैत्रेयी पुष्पा, 'कथा साहित्य में सती पूजा', 'हंस' पत्रिका, जुलाई 2004. पृ.55
3) मैत्रेयी पुष्पा, 'सुनो मालिक सुनो', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2006, पृ. 8

मैयका बिरगाँव में भारतमामा के यहाँ ठहरना पड़ता है। वहाँ आकर 'मंदा' बीमार हो जाती है। कुसुमा भाभी को घर में न देखकर और 'मंदा' को कमरे में अकेली पाकर कैलाश मास्टर बीमार 'मंदा' पर बलात्कार करता है। बलात्कार के कारण 'मंदा' शारिरीक और मानसिक रूप से टूट जाती है । अत्याचार ग्रस्त 'मंदा' अपने आपको गुन्हेगार समझने लगती है। तब कुसुमा भाभी उसे समझाती है- ''बिन्नू, अपने मन में तनिक भी भय मत लाना । झिझक-हिचक में मत रहना। जो हुआ उसे भूल जाना ड्र मत मानना कभी जिन्दगानी में, इतनी बड़ी जिन्दगी में अच्छा-बुरा घट जाता है। बिटिया, उसके कारण मन में गाँठ लगाने से क्या फायदा? जो तुमने किया ही नहीं, उसके लिए अपने को दोसी क्यों मानना ? उस कुकरम की भागीदार 'मंदा' तुम तो बिल्कुल नहीं। तनक देर पहले और आ जाते हम तो खसिया बना देते नासमिटें को।''[1] यहाँ मैत्रेयी ने स्त्री के योनी शुचिता के अवडंबर को नकारा है। क्यों कि अत्याचारी स्त्री को समाज अपराधी-अपवित्र करार देता है। परंतु, अपराधी वह जो बलात्कार जैसा कुकर्म करता है। ''मैत्रेयी की कथा - नायिकाएँ अपनी नैतिकता स्वयं रचती हैं। यह वह तथ्य है जो स्त्री के भविष्य को ठोस आधार दे सकता है और सुरक्षित कर सकता है। बशर्ते स्त्री इस दृढ़ता को आत्मसात कर ले यही तो अपनत्वभरा आग्रह है, मैत्रेयी पुष्पा का सभी स्त्रियों से।''[2] मैत्रेयी पुष्पा योनी शुचिता के अवडंबर को नकारती है और यह सवाल करती है कि स्त्री दुसरों ने किये कुकर्म का बोझ जिंदगी भर क्यों ढ़ोती रहे। इसलिए वह कहती है -''श्लीलता की रक्षा के लिए मैं जिन्दगी को तबाह कर दूँ, ऐसा दबाव मानने से इनकार करती हूँ। अपने लेखन से मेरी सबसे पहली अपेक्षा रहती है, जीवन के पक्ष में खड़े होना। जीवन जो गतिशीलता के साथ रहे। श्लीलता की बनी-बनाई लकीर जब न तब हमें आगे जाने से रोकती है। विशेष तौर पर स्त्रियों के लिए तो बड़ी बाधा पैदा करती है क्योंकि अपने लिए कोई फैसला लेना उसे अपनी गलती लगती है, अपराध बोध जगाता है। और यहाँ से उसका जीवन पराधीनता के हवाले हो जाता है।''[3] 'इदन्नमम' में भी मैत्रेयी पुष्पा ने कुसुमा भाभी के माध्यम से बलात्कार से पीड़ित 'मंदा' को समझाने की

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ.94
2) शरदसिंह - 'स्त्री विमर्श का सही रास्ता दिखाता है मैत्रेयी का साहित्य' 'हंस' प्रकाशन नवंबर, 2010, पृ. 72.
3) मैत्रेयी पुष्पा, 'सुनो मालिक सुनो' वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2006, पृ. 5

कोशिश की है कि दुसरों के कुकर्म का बोझ लेकर अपनी जिंदगी तबाह मत करो, बल्की जीवन को गतिशील बनाओ।

5.1.6) दृढ संकल्पीय नारी –

'मंदा' एक दृढ संकल्पी नारी है वह श्यामली गाँव से लौटते वक्त ही अपने पिताजी का अधुरा सपना 'अस्पताल' शुरू करने की बात मन में ठानकर ही सोनपुरा में प्रवेश करती है। सोनपुरा आने पर गाँव के लोगों के जीवन संघर्ष को देखकर खानाबदोश गाँववालों को हक की रोटी प्राप्त करा देने का संकल्प करती है। कोयले के महाराज से टिकमसिंह की कहानी सुनकर वह संकल्प करती है -"उसने वही बैठे-बैठे संकल्प उठाया। मुझे तो किसी सरकार से भी नहीं लड़ना। किसी राजतंत्र का विरोध नहीं करना, चंद व्यापारियों के विरुद्ध ही तो आवाज उठानी है। वह भी वे जो परदेसी है हमारी भूमि पर। रात में देर तक सोचती-गुनती रही वह।"[1] गाँव आकर वह क्रैशर मालिक अभिलाख सिंह और खियाराम सिन्धी (भैय्याजी) से गाँववालों को मजदूरी देने के लिए संघर्ष करती है। भैय्याजी गाँववालों को मजदूरी देने के लिए तैयार हो जाते है परंतु, आप लोगों का ट्रक्टर हो तो मजदूरी मिलेगी इस शर्त को 'मंदा' स्विकार कर लेती है। "मन्दाकिनी ने सोना छोड़ दिया आँखो में नींद की जगह क्रैशर मालिकों से सामना करनें की युक्तियाँ करकरातीं, मन में संकल्प झरिया की तरह खड़ा हो जाता और इरादे पत्थर की शीला से अडीग और अविचलित गड़े रहते।"[2] मंदा दृढ निश्चयी हो जाती है। वह इस जंग में गाँववालों को आहूती ड़ालने के लिये प्रेरित करती है; गाँववाले भी मंदा के विचारों से जागृत होकर गाँव के स्त्री-पुरुषोंने 'मंदा' को सहाय्यता की और 'मंदा' गाँव के संगठन-एकता के सहारे ट्रक्टर खरीद लेती है। और गाँववालों को अपनी भूमी पर ही मजदूरी प्राप्त करा देती है। 'मंदा' जैसी निश्चयी, दृढ संकल्पी नारी के बारे में राजेन्द्र यादव कहते है - "महानगरीय मध्यमवर्ग की संघर्ष करती और पाँवों के नीचे जमीन की तलाश करती कथा-नारियों के बीच गाँव की 'मंदा' एक अजीब निरीह, निष्कवच, निश्चल, संकल्पदृढ नारी का व्यक्तिव लेकर उभरती है।"[3] मैत्रेयी पुष्पा भी अपने नायिकाओं के बारे में कहती है - "अपने लेख से मेरी सबसे पहली अपेक्षा रहती है,

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ.190
2) वही पृ. 197
3) वही पृ. भूमिका से

जीवन के पक्ष में खड़े होना। जीवन जो गतिशीलता के साथ रहे।''[1] जीवन में आये संकटों से दो हाथ करती जीवन में गतिशील रहनेवाली नारी के रूप में मैत्रेयी ने 'मंदा' को चित्रित किया है।

5.1.7) 'माँ' के स्नेह की भूखी 'मंदा' –

तेरह साल की 'मंदा' बऊ के साथ श्यामली गाँव में दादा पंचमसिंह के यहाँ पनाह पाती है। परंतु, माँ 'प्रेम' का जीजा रतन यादव के साथ भाग जाना और बऊ का बहु 'प्रेम' का तिरस्कार करना 'मंदा' बचपन से देखती-सुनती आई है। 'मंदा' को अपनी माँ से बहुत प्यार है। वह उसे मिलने की इच्छा बऊ के पास व्यक्त करती है, तब बऊ गुस्सा हो जाती है फिर भी मंदा अपनी सगाई के बाद माँ को मिलने 'सैदनगर' चली जाती है। माँ को मिलने पर उसे अकेला छोड़ जाने का कारण भी पूछती है। ''वह सिसकती हुई माँ के आँचल में सिमट गयी उष्णता समेटती रही। लगा कि कभी कोई क्लेश मन में हुआ ही नहीं। कुछ घटा ही नहीं। अभी-अभी जन्म हुआ है उसका। नई अक्षत है, वह। पवित्र गंगा के जल की तरह निर्मल।''[2] 'मंदा' ने अपनी माँ को कभी दोषी नही ठहराया मंदा के सोनपुरा लौटने पर मिलने आई माँ से मिलने को बऊ रोक लगाती है। तब 'मंदा' माँ और औलाद के बीच के संबंध के बारे में कहती है। ''मैं क्या करूँ बऊ ? खाना भी कैसे खाऊ? बुरी हैं, अच्छी है, ऊँच है, नीच हैं; मेरी तो वह माँ हैं। यह नाता तो उचित-अनुचित,मान-मर्यादा, अमीर-गरीब, रूप-कुरूप और हानी-लाभ के परे होता है।''[3] यहाँ 'मंदा' के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने माँ और सन्तान के प्रेम की महत्ता स्पष्ट की है। 'मंदा' अपनी माँ को माफ कर देती है। क्यों कि, वह कहती इस पुरूष सत्ता समाज में स्त्री को भी जीवन जीने का समान अधिकार होना चाहिए। माँ ने दुसरा विवाह किया तो उसमें बुरा क्या हैं। उसके मनमें विचार आते है - ''गाँव में छ-आठ ऐसे जोड़े है, जिन्होंने दूसरा विवाह किया है। माना कि पुरुष हैं, तो क्या अम्मा स्त्री होने के नाते दण्ड की, मखौलकी, हेय दृष्टि की भागीदार हैं? यदि ऐसा नहीं है तो उन पुरुषों से अटपटे प्रश्न क्यों नही पूछता कोई? उन्हें क्यों नहीं निकाल देता घर से कोई ? उनकी निगाह नीची क्यों नहीं होती? वे अस्पताल जैसी सार्वजनिक जगह में रात काटने को क्यों विवश नहीं किये जाते।''[4] स्त्री को समान अधिकार ठुकराने वाले

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'हंस' पत्रिका, सितंबर 2005.
2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ.114.
3) वही पृ. 270.
4) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, वही पृ.271.

समाज के दोगलेपन के बारे में मैत्रेयी पुष्पा ने लिखना शुरू किया वह कहती है - "आँखे झुकानेवाली स्त्री ने सिर उठाया और मैं निर्लज्ज की तरह लिखने लगी- कोई स्त्री तन-मन से पतिव्रता पैदा नहीं होती, जैसे पुरुष एक पत्नीव्रती नहीं होता। किस प्रकार का व्रत मनुष्य का जन्मजात गुण नहीं होता। फिर स्त्री के लिए ऐसा कठोर व्रत किसने बनाया ? जिसे मूक पशू- भी न निभा पाए। स्त्री निभाती रहती है और उसे सिर हिलाने तक का अधिकार नहीं। पारिवारीक शिकंजा अपनी जकड़ पर इठलाता है और समाज व्यवस्था संतुष्ट रहती है कि मनुष्य की नस्ल का आधा हिस्सा (औरत) मनुष्य (पुरुष) के लिए समर्पित है।"[1] भारतीय समाज में स्त्री के समानधिकार को छिन कर स्त्री को नैतिकता के मापदण्ड में कैद कर रखा था, अगर उसने इस बंधन को तोड़ा तो उसे आजिंदगी भर्त्सना क्यों झेलनी पड़ती है, यह विचार माँ 'प्रेम' को लेकर मंदा के मन में आ जाते है और माँ का रतन यादव के साथ विवाह करना वह गलत नही मानती बल्की अपनी माँ को माफी दे देती है। नैतिकता के मापदण्ड को तोड़ती नायिकाओं का चित्रण जब मैत्रेयी करने लगी तब समाज के रक्षण करता जागृत हो गये उनके बारे में मैत्रेयी कहती है -"नहीं जानते कि नैतिक, आर्थिक और सामाजिक सुरक्षाओं में जीवन काटनेवाले उन असुरक्षितों से लोहा ले रहे हैं। जिन्होंने जिन्दगी दाँव पर लगाकर रास्ते बनाए हैं। जानलेवा मुठभेड़ोसे गुजरे हैं, आमने-सामने की लडाइयाँ लड़ी हैं। शायद यही कारण है कि तथ्यात्मक और कथ्यात्मक ईमानदारी से लवरेज लेखन स्त्रियों के लिए देशव्यापी आन्दोलन का रूप ले रहा है। साहित्यिक फतवों से बेपरवाह रहकर।"[2] आज मैत्रेयी पुष्पा जैसी लेखिका स्त्री जीवन के अधिकार की माँग करती हुई परंपरासे आई नैतिकता की झुठी इमारत को ढ़हा देना चाहती है और उसकी चार दिवारों में छिपी स्त्री जीवन की वास्तविकता को अपने साहित्य की सामग्री बनाकर भारतीय स्त्री के यथार्थ जीवन को समाज के सामने प्रस्तुत कर रही है।

5.1.8) विद्रोही 'मंदा' -

'इदन्नमम' में मंदा शोषण के विरुद्ध आवाज उठानेवाली नायिका है। कोयले के महाराज से प्रेरणा लेकर 'मंदा' अपने गाँव के किसानों को एकत्रित करके पहाड़ के ठेकेदारों से संघर्ष करती है। गाँववालों को मजदूरी का हक प्राप्त करा देती है। मजदूरों को बेगार बनाकर रखनेवालों का विरोध करती है। राऊत मजदूरों को उनके श्रम का महत्व समझाती

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'कथा साहित्य में सती पूजा', हंस पत्रिका, जुलाई -2004.
2) मैत्रेयी पुष्पा, 'सुनो मालिक सुनो', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2006, पृ. 7.

है। राऊत मजदूर अभिलाख और लिला राऊतीन को मारकर पहाड़ से भगा देते है उस समय हुई मारपीट में राऊतों को जेल में डाला जाता है, उन्हें छुडवाने गयी मंदा पर वहाँ का दीवान अत्याचार करना चाहता है, तब विद्रोही मंदा उसका निडर होकर प्रतिकार करती है- ''उठा और मुख पर झुक आया दीवान। होठों पर होंठ धर दिये और हाथ कंधे से नीचे.........

तड़ाक ! तड़ाक! तड़ाक!

तीन थप्पड़ों की तीन हाथ गोलों की तरह आवाज गयी बाहर। महापतसिंह सिपाही दौड़ा आया।

दीवान गिरते-गिरते बचा अप्रत्यक्षित प्रहार के कारण।

वह उठी और बोली, ''महापतिसिंह, अब मैं तभी आऊँगी, जब दरोगा जी आ जायेंगे यहाँ।

मन्दाकिनी आँधी की तरह निकल गयी थाने से।''[1]

यहाँ मैत्रेयी पुष्पा ने 'मंदा' को विद्रोही स्त्री के रुप में रेखांकित करते हुये अपने आधुनिक बोध को व्यक्त किया है। आज स्त्री चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण वह अपने अत्याचार के विरुध्द जागृत हो उठी है और उसका संघर्ष जारी है। जिसका चित्रण वास्तविक धरातल पर करने का काम मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। आज के आधुनिक युग में नारी संघर्ष के बारे में मैत्रेयी कहती है-''लेकिन यह भी एक बड़ा सच है कि उन डरे-दबों की मूक-चीखें, मृतको की जीवित असहमतियाँ और छिपे हुओं की घुटी-घुटी आवाजें, उनकी हार नहीं, निराशा नही, संघर्ष का अनंत स्त्रोत है।''[2] जिस स्त्री आवाज को सदियों से दबायें रखने की कोशिश की थी, आज वहीं आवाज अन्याय के विरुध्द खड़ी हुई है। मंदा के अन्याय, शोषण के विरुध्द खड़े हो जाना उसके व्यक्तित्व की विशेषता की पहचान है। डॉ. शोभा यशवंते मंदा के बारे में कहती है-''मनुष्य समाजशील प्राणी होने के नाते संघटन प्रिय है। एक-दूसरे के साथ रहना उसकी मजबूरी भी है और आवश्यकता भी। परंतु नेतृत्व गुण सब ही में विद्यमान होते हैं ऐसा तो

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ.-292.

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'खुलिखिडकियाँ' चौखट के बाहर से पृ.167.

नहीं रहता है। जिसके पास शक्ति, धन संभाषण चातुर्य, समाज कल्याण की भावना होती है उसे नेता बनने के लायक समझा जाता है। राजनीति में नेता प्रतिनिधि बनकर लोगों के बीच जाता है। अनेक प्रश्न, समस्याएँ जनता के साथ मिल-बैठकर हल करता है। नेता का स्व-अस्तित्व रहना माना गया है। ईमानदारी, क्रियाशीलता, बुद्धीमत्ता, कृर्तृत्वशीलता, विश्वास आदि गुणों से युक्त व्यक्ति नेता के रुप में चुना जा सकता है। मंदा में सब गुण विद्यमान है।''[1] मंदा अन्याय, अत्याचार के विरुध्द खड़ी होनेवाली, मजदूरों का पक्ष लेनेवाली, मार्क्सवादी विचारों से प्ररित एक विद्रोही नायिका है।''

5.1.9) धार्मिक मंदा :-

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' मे मंदा को धर्म का पालन करनेवाली एक धार्मिक स्त्री के रुप में जरुर चित्रित किया है परंतु, आज के युग की स्त्री धर्म की चिकित्सा करते हुए धर्म को स्वीकार करती है। एक आधुनिक बोध वह धर्म के माध्यम से प्राप्त करती है। मंदा हर रोज 'रामायण' का पठन करती है, सोनपुरा आकार 'रामायण' पठन करते हुए पौरोहित करके रोजी-रोटी की व्यवस्था जरुर करती है परंतु 'रामायण' पढ़ते समय स्त्री जाती पर धर्म के माध्यम से लगाये गये बंधन के विरोध में भी उसके मन में कई सवाल खडे हो जाते है। माँ 'प्रेम' का सोनपुरा 'मंदा' को मिलने आ जाना और 'बऊ'का उसे घर में प्रवेश न देना यह धर्म की मर्यादा बताता है; तब मंदा के मन में सवाल खड़ा होता है कि वह बऊ को क्या बताये। ''क्या कहे मन्दाकिनी? क्या बताये वह? सही, गलत उचित, अनुचित की परिभाषा किस तरह करे? पुराणकथाओं को किस कसौटी पर कसे? रामायण-महाभारत की हर बात का अंधानुकरण उसके बस का नहीं ....

वे सब पुरुष प्रधान समाज के अवक्षरवादी प्रसंग है। एक और पतिव्रत धर्म की परिभाषा करता राम के साथ सीता का वनगमन दूसरी ओर उसी निष्ठा को तोड़ता मर्यादा पुरुषोत्तम राम का सीता की अग्नी परीक्षा लेना। सीता ने क्यों नही माँगा कोई सबूत कि हे भगवान कहे जानेवाले राम, तुम भी तो उस अवधि में मुझसे अलग रहे हो, अपने पवित्र रहने का साक्ष्य दो।''[2] धर्म का भय दिखाकर हमेश स्त्री जाति को बंधन में रखनेवाले धर्म

---

1) डॉ. शोभा यशवंते, 'मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन', विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2009, पृ. 163.

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ. 269.

की चिकित्सा करनेवाली आधुनिक बोध की स्त्री के रुप में मंदा का चित्रण हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा कहती है-"मेरी नायिकाओं के साथ यही तो हुआ कि उन्होंने अपनी नैतिकता खुद बनाई। अपनी इच्छा की मालकिन अपने शरीर को किसी दुसरे के फैसले पर छोड़नेवाली निश्चित ही अपने दिमाग से काम लेती रही और आगे आई तो उनके लक्ष्य और टैबू के बीच टकराहट हुई वे समाज बिगाडू स्त्रियाँ मानी गई। लेकिन परिवर्तन की निशानी है टकराहट (टूट-फूट) और सर्जना फिर नए की निशानदेही करती है।"[1] नये के निर्माण के लिये पुरानी परम्पराओं का टूटना आवश्यक है इस विचारो को मंदा दोहराती है, धर्म के माध्यम से समाज में प्रचलित अन्धविश्वास का वह खंडन करना चाहती है,"सो हम कहते है बऊ पुरानी परम्पराओं की जो थोथी और दुखदायिनी नीति है, उसकी अंधभक्ति न करो।", "पुरुष -पुजा को मान-मर्यादा का नाम न दो। तुम उसी परम्परा को तो निभाने की कोशिश करती रही और उसी का फल है कि आज तक हमारें घर की स्थिती वही की वही है, और बुरी।"[2]

पुरुष प्रधान संस्कृती को स्विकार करते हुये जीने की आदत ने बऊ दादा पंचमसिंह के यहाँ श्यामली जरुर चली जाती है परंतु, वहाँ भी पुरुषों द्वारा ठगे जाने पर अपने घर सोनपुरा लौटर्ती है। अगर उसने अपने घर के निर्णय खुद लिये होते तो आज उसके घर की बुरी हालत न होती परंतु, परम्परा का पालन करनेवाली बऊ को परम्पराओं को तोड़ना आवश्यक है इस बात को मंदा समय-समय पर स्पष्ट करती है, उसके लिये धर्म का प्रमाण देती है। सोनपुरा गांव के लोगों को संगठित करने के लिये मंदा 'रामायण' के 'सेतूबंधन' का उदाहरण देकर ही संगठन बांधती है। इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' मे मंदा का धार्मिक स्त्री दिखलाते हुये भी वह आधुनिक बोध से जागृत नारी के रुप में चित्रित की है जो धर्म का पालन चिकित्सा से करके, उसका स्वीकार करती है।

5.1.10) गाँव का नेतृत्व करनेवाली 'मंदा' :-

'इदन्नमम'की नायिका 'मंदा' का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने आधुनिक नारी के रुप में करते हुए गाँव के राजनिति में सहभाग लेनेवाली और निर्णय लेनेवाली नारी के रुप में

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'सुनो मालिक सुनो', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2006, पृ. लक्ष्मण रेखा की चुनौतियों' से

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ. 270.

चित्रित किया है। 'इदन्नमम' की मंदा आज के ग्रामीण भारतीय नारी का वह रुप है, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीति मे अपना स्थान निर्माण कर रही है। मैत्रेयी पुष्पा कहती है, "मैं गाँव की स्त्री नहीं लायी, स्त्री का गाँव लायी हूँ।"[1] मंदा 'सोनपुरा' गाँव मे पिताजी का अधुरा स्वप्न 'अस्पताल' शुरु करने का निश्चय लेकर आ जाती है, परंतु गाँव आकर देखती हैं कि औद्‌यागिकरण के शिंकेज में फसा गाँव का आदमी खानाबदोश की स्थिती से गुजर रहा है। 'इदन्नमम' में चारों ओर बजरी, रेता और धूल का बवंडर पहाड़ो पर छाया है। दो चार गाँवों को छोड़कर प्रत्येक गाँव में पहाड पर क्रशर मशीन लगी हुई है।[2] मंदा गाँव के लोगों की स्थिती में सुधार लाने के लिये प्रथम उन्हें मजदूरी प्राप्त करा देना अपना कर्तव्य समझकर गाँव का नेतृत्व करती हुई, गाँववालों को एकत्रित करके क्रैशर मालिकों से संघर्ष करती है। गाँव में अस्पताल, बिजली, स्कुल आ जाये इसलिए वह सरकार दरबार में जाकर संघर्ष करती है, वहाँ के भष्ट्राचार, राजनीतिक लोगों से दो हाथ करती रहती है। वोट माँगने आये क्षेत्र के एम.एल.ए. 'राजासाब' को वह गाँव की स्थिती से परिचित करती है। अपने क्षेत्र के लोगों को वोट का महत्व समझाती है, मंदा के नेतृत्व को स्विकार कर गाँव-हारकर 'राजासाब' मंदाकिनी को मिलने आते है-"यह मन्दाकिनी कौन है? कौन नेता या कार्यकर्ता है किसी पार्टी की? या मजदूर युनियन वगैरह से जुड़ी हुई कोई? क्यों कि क्रैशर्स पर मजदूर भी काफी संख्या में है यहाँ। उनके वोटों पर भी काफी दारोमदार है।"[3] मैत्रेयी पुष्पा ने मंदा के माध्यम से यही स्पष्ट किया है कि आज की भारतीय स्त्री राजनीती में अपना प्रबल स्थान निर्माण कर सकती है, गाँव के निर्णय वह खुद ले सकती है। परिणाम स्वरुप; एम.एल.ए. राजासाब जैसे राजनीतिक नेता का स्थान भी डावा डौल होने लगता है। डॉ. वसंत सुर्वे जी कहते है- 'इदन्नमम' में पुलिसी अत्याचार, भ्रष्टाचार, राजनीतिक दाँवपेंच, किसान आंदोलन, मजदूरों की दर्दनाक और दयनीय स्थिती तथा त्योहार आदि का चित्र स्पष्ट किया है। मंदा ने चलाये सहकारिता आंदोलन के चक्र ने रोजी-रोटी का प्रश्न हल हुआ फिर भी उसके मन में अस्पताल की कसक शेष रही है।"[4] मंदा अपना सुख-दुःख

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'कस्तुरी कुंडल बसै,' 'राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.', 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2002, पृ. 37.
2) डॉ. वसंत सुर्वे, 'आपात्कालोत्तर हिंदी ग्रामांचलिक उपन्यासों की मीमांसा,' साहित्य सागर प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2007 पृ. 160.
3) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं.2006, पृ. 305.
4) डॉ. वसंत सुर्वे, 'आपात्कालोत्तर हिंदी ग्रामांचलिक उपन्यासों की मीमांसा,' साहित्य सागर प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं.2007, पृ. 58.

त्यागकर गाँववालों के लिए अपने जीवन का त्याग करनेवाली एक सक्षम नेतृत्व के रुप में 'इदन्नमम' में उभरती है; जिसनें अंत में अपने प्रेमी 'मकरंद' का भी त्याग किया है।

'राजासाब' मंदा को वोट न करने का कारण पुछते है तब कुशल नेता की तरह मंदा कहती है, "आप सोचते होंगे यहाँ के लोगों का रुख ऐसा हुआ? ऐसा भाव क्यों अपना बैठे? सो भी हम आपको बताते हैं .... असल में इस क्षेत्र के गाँव शहर कस्बों से दूर पड़ते है। दूर ही नहीं, बहुत दूर। सौदा-सुलफ की जरुरत हो तो गाँव से गाँव चीजें बदलकर पूरी कर लेते हैं, या कुछ दिन अपनी जरुरतों को काटकर भी गुजर कर लेते है। मन समझ लेते हैं कि जब गाड़ी बैली का साधन मिलेगा तब हो आयेंगे एरच, एट उरई।"[1] अपने गाँव का दु:ख दर्द समझनेवाली मंदा अपने गाँव की पीडा बयान करती है, सचेत हुए राजासाब राजनीतिक दाव खेलते है, और चुनाव तक अस्पताल में डॉक्टर भेज देते है। गाँव मे बिजली आ जाती है। यहाँ गंदी राजनीती के दांवपेच क्यों न हो परंतु अपने पहाड़-पत्थरों से भरे गांव को 'सोने'जैसा बनाने के लिए 'सोनपुरा' का नेतृत्व करनेवाली मंदा भारतीय समाज के सामने एक सक्षम, कुशल नेतृत्व करनेवाली गांव की नारी के रुप में प्रस्तुत होती है। मैत्रेयी पुष्पा अपने स्त्री पात्रों के बारे में कहती है-"मैं पलके उठाकर देखती हूँ, वास्तव में ही एक खौफनाक सच को उजागर करता हुआ समय है। यदि नहीं होता तो बार-बार मरती हुई चेतना और सहती-सहमती हुई अस्मिता के खिलाफ उठी चली आती 'फैसला' की वसुमती? सामाजिक विषमताओं और आर्थिक शोषण वर्ग को चुनौती देती 'इदन्नमम' की मंदा? और उसी से कदम मिलाती हुई जातिगत तथा राजनीतिक दलालों से सिंहासन छीनने का इरादा किया है 'चाक' की सारंगी नैनी ने। ये आधी दुनिया के बाशिंदे सम्यक दृष्टि और नैतिक आजादी में दावेदारी करने लगे हैं, किन्तु प्रजातंत्र को लोकतंत्र के रुप में देखना सिखा गये है।"[2] भारतीय संविधान ने स्त्री-पुरुष को समानाधिकार प्रदान किया है। आज भारतीय नारी राजनीति में अपना निर्णय, अधिकार, महत्व स्थापित कर चुकी है। डॉ. शोभा यशवंते कहती है-"मानवतावाद, सहिष्णुता, भाईचारा, विश्वास, सहनशीलता, करुणा,

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'कस्तुरी कुंडल बसै', राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2002, पृ.307.

2) वही पृ. 259.

दया, क्षमा, शांति, आदि गुणों से मैत्रेयी की नारी परिपूर्ण है।''[1] 'इदन्नमम' की मंदा भी उपर्युक्त गुणों से परिपूर्ण स्त्री है; उसके बारे में कोयले के महाराज करते है- ''हमे तो लगता है, मन्दा इस गाँव की नहीं, इस क्षेत्र की भूमिसुता है, जो इस धरती की रग-रग को पहचानती है। जैसे यहाँ के आदमी की धड़कन से चलती हों उसकी साँसे।''[2] स्त्री के हाथ में जब नेतृत्व दिया जाता है तब वह उस पद को उचित न्याय देती है, इसका श्रेष्ठ उदाहरण 'इदन्नमम' की मंदा के माध्यम से प्रस्तुत होता है।

5.1.11) त्यागमूर्ती 'मंदा' :-

वर्तमान युग में हर जगह संघर्ष करते हुये अपना स्थान निर्माण करनेवाली ग्रामीण स्त्री के रुप में 'मंदा' का चित्रण प्रस्तुत होता है। बचपन से ही समाज, रिश्तेदारों की धोकाधड़ी से माँ-बाप के प्यार से वंचित मंदा दादा पंचमसिंह के यहाँ पनाह पाती है। परिणाम स्वरुप; पनाह मे रहनेवाली मंदा हर चीज से मोह त्यागना बचपन से ही सिखती है। गोविन्दसिंह की ओर से जमीन हड़पने पर और मकरंद से सगाई टूटने पर भी वह संयमी बनकर 'श्यामली' गाँव को त्यागकर अपने गाँव सोनपुरा लौटती है। गाँव की स्थिती देखकर अपना जीवन गाँव के उत्कर्ष के लिये समर्पित करती हुई वहाँ क्रैशर मालिक, राजनीतीक लोगों के विरुध्द आवाज उठाती है। गाँव के किसानों, मजदूरों, स्त्रियों पर होनावाले अत्याचार के विरुध्द जंग छेडती है। रात-दिन गाँव का विकास यही ध्येय अपने आँखों में लेकर जिनेवाली मंदा अंत में राजनीतिक धोकाधड़ी में फसायी जाती है। सगुणा की हत्या के रुप में उसपर कलम 302 दफा का इल्जाम लगाया जाता है। तब भी न डगमगाते हए जिस प्रेमी का वह इंतजार कर रही थी, उसका भी त्याग करके अपना जीवन गांव के लिये समर्पित करती है।

मैत्रेयी पुष्पा की नायिकाओं के बारे में डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकरजी कहते है- ''मैत्रेयी पुष्पा ने मंदा, कुसुमा, सगुणा आदि शक्ति सम्पन्न नारियों के दर्शन कराए हैं। नारी शोषण के सारे रुप इसमें प्रकट होते है। इसके खिलाफ लोगों को संगठित कर इनका नेतृत्व करने का कार्य मंदा करती है। मंदा के व्यक्तित्व में यथार्थ और आदर्श एकरुप होगए है।''[3]

1) डॉ. शोभा यशवंते, 'मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन', विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2009, पृ.166.
2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ.305.
3) सम्पादक- 'गोविन्द मिश्र', 'अक्षरा' 'आलोचना विशेषांक' अक्टू-दिसंबर-2000, पृ.74.

मंदा औद्योगिकरण और गंदी राजनिती के शिकार हुए ग्रामिणों के संघर्षपूर्ण जीवन को उभारना, उनके जीवन के दु:ख दर्द को मिटाना अपना दायित्व स्विकार कर लेती है। अपने अँचल के दर्द को मिटाने की इच्छाशक्ति ही उसके जीवन का आधार बन जाता है; अँचल उसका आजिंदगी साथी बन जाता है।

निष्कर्ष :-

यहाँ 'मंदा' का पात्र आधुनिक बोध से जागृत पात्र हैं ऐसे पात्र अपने अँचल को प्रगतिपथ पर ले जाने के लिए, वहाँ के जीवन में गतीशिलता लाने का संकल्प उठाये होते है। मंदा भी अपने विचारों और कार्यों द्वारा पाठकों का ध्यान आकर्षित करती हुई अपनी विशेषता के साथ प्रस्तुत होती अपने गाँव-क्षेत्र को विशेष बनाने का प्रयास करनेवाली आधुनिक ग्रामीण नारी के रुप में प्रस्तुत होती है। एक अल्प शिक्षित स्त्री अपने दृढ विश्वसा से गाँव-अनगाँव के लोगों में विश्वास निर्माण करते हुए अपने अस्तित्व के लिए खुद संघर्ष किये बिना सुखी जीवन की कल्पना करना व्यर्थ समझती है और अपने गाँव की किस्मत बदलने के लिए ईमानदारी, क्रियाशीलता, बुद्धिमत्ता और कर्तृत्वशीलता से गाँववालो के सामने एक आदर्श 'नेता' के रुप में प्रकट होकर गणतंत्र देश मे रहनेवाले भारतीय समाज को अपने न्याय-हक के लिए लड़ने के लिए संघटन का महत्व समझाकर म. गांधीजी का आदर्श समाज निर्मिती का स्वप्न पुरा करना चाहती है। अपने बुध्दि, संभाषण, चातुर्य, धार्मिकवृत्ती और समाज सेवा भावी वृत्ती से 'मंदा' 'इदन्नमम' उपन्यास की नायिका के रुप में इस कारण महत्व पाती है कि अल्पशिक्षित होकर भी अपने दृढनिश्चय से गांव, समाज के विकास के लिए अपना जीवन सम्मर्पित करती है। 'मंदा' के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव की स्त्रियों को समाज, गाँव के लिए कार्यरत रहने की चेतना प्रदान की है।

5.2 'कुसुमाभाभी' :-

'श्यामली' गाँव के दादा पंचमसिंह के मझले भाई गोविन्दसिंह के पुत्र यशपाल की पहली पत्नी माधोपुरावाली कुसुमाभाभी 'इदन्नमम' उपन्यास में आधुनिक ग्रामीण स्त्री के 'विद्रोही नारी' के रुप में प्रस्तुत होती है। सदियों से परंपरा के नाम पर बंदि बनायी गई भारतीय स्त्री जो अपने हक, अधिकार को समझकर जागृत होकर 'विद्रोही बनी है, उसी का प्रतिक 'कुसुमाभाभी' है। जिस भारतीय पुरुष को समाज ने एक से ज्यादा ब्याह करने की

छूट दी है उसी भारतीय समाज के सामने विधवापन और सौतेलेपन के कारण शरीर की भूक मिटाने के लिये अनैतिकता को अपनाने वाली मंदा की माँ 'प्रेम' और कुसुमाभाभी ऐसे नारी पात्र है; जिन्होंने सदियों से सिर्फ स्त्री के लिए बनाये गये परंपराओं का खंडन किया है। पति ने छाती पर सौतन लाकर बिठाने पर कुसुमा अपने चचरे ससुर अमरसिंह (दाऊजू) से शारिरीक संबंध स्थापित करती है। मंदा उन दोनों के रिश्ते से परिचित हो जाती है तब उसे कुसुमा यही सवाल पूछती है "बिन्नू, सौ बातों की एक बात हैं नाते-सम्बन्ध का नाम बतायें, गढे सो बेकार है। साँचा नाता तो प्यास और पानी का है।"[1] निसर्ग नियम के अनुसार नर और मादी यही रिश्ता उन्हे एकत्रित लाता है। परंतु भारतीय समाज ने स्त्री को जानवर मानकर नैतिकता, रुढि, परंपराओं के खुंट से स्त्री को बांध रखा है, तो दूसरी तरफ पुरुषवर्ग को पूरी तरह छूट दी है, इसी दोगलेंपन का विरोध कुसुमाभाभी कहती है-"लो एक तो खुंटे बाँधा पाँगरु, दुसरा सरग में उड़ता पंछी।" "ढोर और पंछी सहचर नहीं हो सकते मन्दा।"[2]

सदियों से जिसे शुद्र मानकर रुढी, परम्पराओं के नीचे जिसके अधिकार दबाकर रखे थे, आज वह स्त्री जागृत होकर अपने अधिकार के लिये विद्रोह कर रही है और यह उसका हक्क ही है। इस बारे में मैत्रेयी पुष्पा कहती है- " 'इदन्नमम' की 'कुसुमाभाभी' को सवालों के घेरे में लिया जा सकता- जहाँ वह 'बहू' के चचिया ससुर से शारिरीक संबंध, और फिर बेटा पैदा होने की घटना से गुजरती है? इस 'क्यों' का जबाब ही सर्जनात्मक प्रकिया में कृति का सरोकार बनता है। जब कोई वर्चस्व इतना शक्तिशाली हो जाता है कि व्यक्ति की आकाक्षाएँ, सपने, जिन्दगी पिसने लगे, तो फिर नीति-रीति के बन्धन अपना अर्थ खोने लगते हैं।"[1] सदियों से नैतिकता के चौखट में बंदिस्त करके रखी नारी ने आज के आधुनिक युग में चौखट को लांघकर, धर्म भ्रष्ट होने की चिंता को छोडकर अपना अधिकार प्राप्त करना अपना जीवन स्विकार किया है और वह आज मार्तृत्व, उत्तरदायित्व और कर्तृत्व से अपना अस्तित्व निर्माण कर रही है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ.82.

2) वही पृ. 83.

3) मैत्रेयी पुष्पा, 'सुनो मालिक सुनो', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2006, पृ. लक्ष्मण रेखा की चुनौतियों' से।

भारतीय समाज के दोगले नीती के बारे में मैत्रेयी पुष्पा कहती है-"कोई बताए विवाह की इस धांधली भरी मर्यादा में स्त्रियाँ अपना जीवन आँखे मूँदकर क्यों झोके? अब तो मान लिजिए कि विवाह की पवित्रता जिन्दगी का सबसे बड़ा धोखा है। पुरुष के लिए तो यह अनिवार्य है ही नहीं स्त्री भी इससे गुरेज क्यों न करें? अत: व्यभिचार शब्द हमारे लिए बेमानी है।"[1] स्त्री की नैतिकता से परिवार की नैतिकता जोडी जाती है इसका विरोध यहाँ मैत्रेयी ने किया है। 'इदन्नमम' में मंदा पर कैलाश मास्टर से बलात्कार हो जाने पर कुसुमाभाभी नैतिकता के मापदण्ड पर अपने आप को अपराधी माननेवाली मंदा को कहती है- "बिन्नू, अपने मन में तनिक भी भय मत लाना। झिझक-हिचक में मत रहना। जो हुआ उसे भूल जाना। डर मत मानना कभी। जिन्दगानी में इतनी बड़ी जिन्दगी में अच्छा-बुरा घट जाता है बिटिया, उसके कारण मन में गाँठ लगाने से क्या फायदा? जो तुमने किया ही नहीं, उसके लिए अपने को दोसी क्यो मानना? उस कुकरम की भागीदार, मन्दा तुम तो बिलकुल नहीं। तनक देर पहले और आ जाते हम, तो खसिया बना देते नासमिटे को।"[2]

बलात्कारी स्त्री को ही नैतिकता के मापदण्ड में दोषी ठहराना इस समाज की नीति का कुसुमा भाभी विरोध करती है और अपने शरीर की भूख का अधिकार प्राप्त कर पुत्र को जन्म देने पर उसके अधिकार के लिये संघर्ष करती है। इस तरह 'इदन्नमम' की कुसुमा मैत्रेयी पुष्पाजी की वह नायिका है-जो अपने अधिकार को पाने के लिये समाज के परंपरागत बंधन बेडियों को तोडना और अपना 'स्व' खोजकर अपने अधिकार के लिये संघर्षरत रहकर आनंद से जीवन जीना अपना हक मानती है।

5.3 'बऊ' :-

'इदन्नमम' की बऊ पुरानमतवादी स्त्री है। भारतीय पुरुष प्रधान समाज में पत्नी-बढी विधवा बऊ रुढी परम्पराओं का पालन करते हुए नौतिक बंधन में जीना ही विधवा धर्म मानती है। बऊ टीकमगढ़ रियासत के मसंबदार रघुराजसिंह की कन्या धनी सुभागसिंह की पत्नी और सोनपुरा का प्रधान महेंदर की 'माँ' है। भारतीय समाज ने सौंपे विधावापन के नियमों को ढोनेवाली बऊ की बहू (प्रेम) पती महेंदर की हत्या के बाद जीजा रतन यादव

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'सुनो मालिक सुनो', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2006, पृ. 71-72. लक्ष्मण रेखा की चुनौतियों' से।

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ. 94.

के साथ भाग जाती है, तब परंपरावादी बऊ बौखला जाती है, वह मंदा को कहती है, "राँड-विधवा तो हम भी हुए थे बेटा। और चढती उमर में हुए थे। जनी के लाने आसनाई करने वालों की कमी नहीं होती। पर हम जानते थे ऊँच-नीच। बात को परखने की बुध्दि नहीं खोई थी हमने। जाहिर थी यह बात कि उन दुष्टों की आँख हमारी देह और जायदाद पर थी।"[1] समाज के नीतिनियमों के दायरे में रहकर विधवापन को जीनेवाली परंपरावादी बऊ अपनी बहू 'प्रेम' को जिंदगी भर स्विकारती नही। बहू (प्रेम) के कारण बहुरुपियनी बनकर अपनी खानदान की निशानी 'मंदा' को बचाना यह अपना कर्तव्य, जीवन मानती है, श्यामली गाँव की एकता को देखकर आश्चर्य व्यक्त करती है। अन्धश्रध्दा रखनेवाली 'बऊ' 'मंदा' को ओरछा की गढ़ी में अकेली न घुमने के लिये कहती है, वह भूत-प्रेत पर विश्वास रखती है। फिर भी गोविन्दसिंह के द्वारा जमीन हड़प लेने पर 'सोनपुरा' लौटी 'बऊ' अपनी नातीन मंदा के कार्य में सहयोग देकर 'गाँव' की मिट्टीं के लिये सर्वस्व प्रदान करनेवाली स्त्री के रुप में प्रस्तुत होती है। 'इतन्नमम' में 'बऊ' परंपरावादी विधवा जीवन जीकर पतिव्रता का आदर्श स्थापित करती है।

5.4 'प्रेम' (मंदा की माँ) :-

'इदन्नमम' उपन्यास की नायिका मंदा की माँ, 'बऊ' की बहू और 'महेंदर' की पत्नी 'प्रेम' अपने पती की हत्या के बाद अपने अधेड उम्र के जीजा रतन यादव के साथ भाग जाती है और उसके बहकावें मे आकार जमीन जायदाद और मंदा को पाने के लिये बऊ के विरुध्द केस दायर करती है। बऊ अपनी खानदान की निशानी को बचाने के लिये श्यामली गाँव पनाह लेती है। 'प्रेम' को समय के अंतराल के बाद जीजा रतन यादव का असली रुप ध्यान में आता है। 'प्रेम' जिस प्यार को पाने के लिये गई थी वहा वह खिलौना बनकर रह जाती है। रतन यादव उसे अपने भाई के लिये बिठाता है। प्रेम अपनी लडकी मंदा को मिलने के लिये तड़पती है- उसे कठिण समय में मदद भी करती रहती है, परंतु खानदान की मानमर्यादा का उल्लघंन करने वाली 'प्रेम' का बऊ स्विकार नही करती। अंत में प्रेम का रतन यादव के हाथ का खिलौना बनकर रहना यह साबित करता है कि भारतीय समाज में अगर स्त्री ने अपने हक अधिकार को पाने के लिये पुरुष ने बनाये नीति-नियामों को तोड़

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ.267.

भी दिया तो आगे चलकर वही पुरुष उसके अधिकारों को कुचल डालता है, इसका 'प्रेम' उदहारण है।

5.5 'सगुणा' :-

स्त्री जीवन में सहेली का स्थान महत्वपूर्ण होता है। बचपन से लेकर मृत्यु तक जीवन के सुख-दु:खों को बाँटने का विश्वासपात्र स्थान स्त्री जीवन में सहेली का होता है। स्त्री अपना प्रत्येक सुख-दु:ख घर, परिवार, समाज के सदस्योंके साथ बाँट नही सकती परंतु उसके विश्वास की जगह 'सहेली' होती है। 'इदन्नमम' की मंदा की सहेली सगुणा का स्थान उसके जीवन में महत्वपूर्ण है। श्यामली गाँव गई मंदा अपने सहेली सगुणा के यादों को लेकर जाती है। सावन के महीने में खेलेजानेवाला झुला, भुजूरियाँ के गीत उसे याद आते है। सगुणा मंदा को झुला झुलाती थी और बाद में उसकी पलटी आती थी।

'मंदा' जब 'श्यामली' से सोनपुरा लौटती है तब सबसे सगुणा को बुलाने के लिये कहती है, जो पहले से ही वहाँ उपस्थित थी। मंदा के प्रत्येक काम में एक सच्ची दोस्त बनकर सगुणा मदत करती रहती है। घर-बार के काम में वही बऊ का हाथ बाटती है जिस कारण मंदा बाहर के काम सहजता से निपटती लेती है। सगुणा अपनी जिज्जी 'मंदा' का सुख-दु:ख जानती है, मकरंद की चिठ्ठी आने पर वह चिढ़ाती भी है- "साँची कहना जिज्जी, हमारा कौल खाकर, कुछ नहीं लिखा?"[1] क्रैशर पर जब अभिलाखसिंह मंदा को मारपीट करता है, तो उसके घाव को देखकर सगुणा दु:खी होती है। मंदा भी सगुणा के साथ अपना सुख-दु:ख बाँटती है- "पारस लोहे को भी कंचन कर देता है। सगुणा हमारे भाग में न जाने कौनसा सराप है कि जो सोचें, ठीक उसका उलटा होगा, विपरित घटेगा।"[2]

भृगुदेव का आतिथ्य करनेवाली, डॉ. इन्द्रनील को साहाय्यता करनेवाली सगुणा मंदा को सहाय्यता करते हुये उसके काम कों बाँट लेती है। परंतु, मंदा के चुनाव कार्य में लग जाने पर सगुणा की तरफ ध्यान नही जाता उसका मंदा के घर आना-जाना कम हो गया है। एक दिन पप्पू मंदा को बताता है कि सगुणा के घर अभिलाखसिंह आता-जाता है, अभिलाखसिंह के लडके के साथ उसकी शादी तय हो गई है। मंदा के बुलाने पर सगुणा आती

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं.2006, पृ.222.

2) वही पृ. 200.

है परंतु अभिलाख द्वारा उस पर किये जानेवाले अत्याचार के बारे में वह कुछ बताती नही है, सिर्फ रोती रहती है।

मंदा गोपालपुरा मोतीझरा की फैली बीमारी का इलाज कराने कम्पाऊडरजी के साथ चली जाती है और वहाँ अचानक पप्पू आकार बता देता है "जिज्जी, सगुणा ने अभिलाख की देह में चक्कू ही चक्कू मारे! गोंद डाला सरीर।

"अभिलाख मर गया।" पप्पू की छोटी -छोटी आँखो मे बेशुमार पाणी भरा है। रेख उठें होंठ कुछ मोटे हो आये और काँप रहे है।......... वह बोलने की कोशिश कर रही थी कि उससे पहले पप्पू बोल पड़ा- "और, और सगुणा ने अपनी देह पर मिट्टी का तेल किंछकर आग लगाली। सगुणा जल गयी जिज्जी! जल गयी सगुणा।"[1]

इस तरह 'इदन्नमम' मे अभिलाख जैसे सेठ-साऊकार, मालिक लोग गाँव की औरतों पर अत्याचार करते रहते है। मजदूरी करने के लिए आई मजदूरीनीओं पर भी वह अत्याचार करते रहते है। उनके आतंक और अत्याचारों के कारण कोई उनके खिलाफ आवाज नही उठाता और सगुणा जैसे निष्पाप जीव को अपना चरित्र धोके में डालना पड़ता है और अंत में चरित्र हनन के कारण आत्महत्या करनी पड़ती है। आज की स्त्री ने अपनी रक्षा खुद करनी चाहिए इस बारे में मैत्रेयी पुष्पा कहती है-"मेरी तीव्र इच्छा है, हजारों साल से चला आ रहा सिलसिला टूटना चाहिए। अपने हक के लिए लड़ना चाहिए। संरक्षण और सुरक्षा स्त्री के लिए वे खतरनाक और बर्बर शब्द हैं, जो भरोसा देकर उसे नष्ट करते हैं। बात वही है कि जो अपने प्रति न्याय की बात नहीं सोचता, उसे न्याय देने की मूर्खता कौन करेगा?"[2] सगुणा जैसी कई स्त्रीयों पर अत्याचार के विरुध्द आवाज उठानी चाहिए चुप रहकर अत्याचार को सहना खतरनाक और जानलेवा सिध्द होता है, यही विचार सगुणा के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने भारतीय स्त्री के सामने रखा है।

निष्कर्ष :-

मैत्रेयी पुष्पा एक संवेदनशील लेखिका है। 'इदन्नमम' उपन्यास में लेखिकाने गाँवांचल का चित्रण करते हुए गाँव के स्त्री जीवन को स्त्रीपात्रों के माध्यम से उभारा है। जिसमें आज

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ. 360-361.
2) वही पृ. 23.

की ग्रामीण स्त्री सदियों से चले आये अन्याय-अत्याचर का विरोध करती हुई अपनी ठोसभूमी ढूंढ रही है। मैत्रेयी की स्त्री पात्र शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, राजनितीक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनकर खुद की जिंदगी के निर्णय खुद लेना चाहती है। 'इदन्नमम' मे भी मंदा, कुसुमा, प्रेम जैसी स्त्री पात्र अपने जिंदगी के निर्णय खुद लेकर अपना अस्तित्व समाज में स्थापित करना चाहती है। मंदा, सगुणा जैसी पीड़ीत, शोषित नारी ने आज पुरुष के विरुध्द जंग छेडना शुरु किया है वह खुद मिटकर अपनी निशानी समाज में कायम रखने की कोशिश में लगी है। इस तरह 'इदन्नमम' के सारे स्त्री पात्र शरीर के अलावा मास्तिष्क से काम लेते हुए अपना स्थान निर्माण कर रही है।

ब) पुरुष पात्र

5.6 दादा 'पंचमसिंह' :-

स्वतंत्रापूर्व और स्वतंत्रता के बाद दो पीढ़ियों को जोडनेवाले गांधीवादी विचारों के वाहक के रुप में 'इदन्नमम'में 'दादापंचमसिंह' स्वतंत्रता के बाद अपने गाँव 'श्यामली' में रामराज्य की स्थापना करना चाहते है, उनके मित्र मोदी लल्ला और चिफसाहब जैसे दोस्त उन्हें साथ देते है। ये तीनों मित्र श्यामली गाँव के 'एकात्मता' के प्रतिक है। अपनी न्यायप्रियता और उदारता के लिये प्रसिद्ध दादापंचमसिंह सोनपुरा की बऊ और उसकी नातीन मंदा को अपने यहाँ पनाह देते है। बऊ और मंदा को लेकर संयुक्त परिवार में संघर्ष भी होता है, परंतु न्यायप्रिय दादापंचमसिंह अंतिम समय तक बऊ और मंदा की रक्षा करना कर्तव्य के साथ-साथ अपना धर्म समझते है। गाँव में जातीय और धार्मिक एकात्मता बकरार रहे इसलिए अपने अंगन में सब जाति के लोगों के साथ भजन-किर्तन करते है। गाँव के सब लोगों के लिए एक ही पनघट रखते है, ऐसे न्यायप्रिय दादा पंचमसिंह के भाई गोविन्दसिंह जब बऊ की जमीन हड़प कर लेते है तब दादा पंचमसिंह अंदर से टूट जाते है। बदलते समय के साथ गाँव का सामाजिक वातावरण दुषित बनता जा रहा था। धार्मिकता, राजनीति, स्वार्थ, संपत्ती का लालच आदि कारणों से गाँव खंडित होते जा रहे थे, जिसे देखकर दादा पंचमसिंह निराश हो जाते है।

अयोध्या के बाबरी मशीद कांड के प्रभाव से उनका श्यामली गाँव भी ग्रस्त हो जाता है गाँव के चीफ अन्वरसाब और मोदी लल्ला जैसे उनके दोस्त इस हादसे से उनसे बिछुड

जाते है। अंत मे रामराज्य का स्वप्न देखनेवाले दादा पंचमसिंह आज की गंदी राजनिती, धार्मिकता, स्वार्थ लोलुपता के आगे हारकर कुंठाग्रस्त पंचमसिंह के माध्यम से रामराज्य की कल्पना करनेवाले गांधीवादी विचारों की आधुनिक युग में हार दिखाई है।

5.7 'मकरन्द' :-

'इदन्नमम' उपन्यास की नायिका 'मंदा' का प्रेमी 'मकरन्द' उपन्यास में शुरु से अंत तक छाया रहा है। श्यामली गाँव के दादा पंचमसिंह के बेटे दरोगा विक्रमसिंह का एकलौता बेटा मकरंद अपने दादा के यहाँ रहकर पढ़ाई कर रहा है। दादा पंचमसिंह के यहाँ पनाह पाई सोनपुरा की बऊ की नातिन मंदा अकेले शांत स्वभाव के मकरन्द से दोस्ती करना चाहती है। बचपन में ही स्कूल की शिक्षा छूट जाने पर स्कूल जाते मकरंद को देखना उसकी परीपाटी बन जाती है। मंदा की शिक्षा को हासिल करने की इच्छा को देखकर मकरन्द उसे किताब लाकर देता है और उन दोनों में दोस्ती निर्माण हो जाती है। मकरन्द और मंदा की दोस्ती को घरवाले रिश्ते में बदल देते है। गोविन्दसिंह के कहने पर दादापंचमसिंह मकरंद और मंदा की सगाई कर देते है। मकरंद और मंदा का रिश्ता और ही मजबूत हो जाता है और समय के साथ दोस्ती प्यार, आकर्षण में बदल जाती है परंतु, आगे चलकर मकरंद के पिताजी और माँ इस सगाई से इन्कार कर देते है। मकरंद की माँ बऊ के हाथ सगाई की मुंदरी थोपकर उसे इलाहाबाद पढ़ने के लिये ले जाती है।

बचपन की दोस्ती जब प्रेम में बदल जाती है तब मकरंद मंदा को भूल नही पाता है। वह मंदा को बचपन में दिया वचन निभाना चाहता है। सोनपुरा जाकर वहाँ अस्पताल शुरु करना है यह स्वप्न लेकर वह डॉक्टरी की शिक्षा लेने लगता है। सोनपुरा लौटी मंदा की हिम्मत बांधनेवाला, उसके कार्य के लिये प्रेरणा देनेवाला मकरंद आज के ग्रामीण युवकों के सामने एक आदर्श प्रेमी के रुप में उभरता है, जो उच्चशिक्षित होकर भी अपनी अल्पशिक्षित प्रेमिका को भूलता नही हैं। गाँव आकर अपने गाँव के लोगों की सेवा करनेवाला मकरंद एक सच्चे प्रेमी, एक आदर्श नवयुवक पात्र है। मकरंद आज के भ्रष्ट राजनिती, भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था का विरोध करनेवाला पात्र है। मंदा को प्रत्येक खत में वह शिक्षा व्यवस्था में चलनेवाले भ्रष्टाचार, डोनेशन, रॅगिंग जैसी घटनाओं का परिचय देता है। वह आज की शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने की बात करता रहता है। इस तरह मकरंद वह उच्चशिक्षित पात्र

है, जो अपने कर्म के माध्यम से समाज में स्थित गंदगी को साफ करना चाहता है। मकरंद सुधारवादी विचारों का धरोहर है, जो अंत तक एक सच्चा प्रेमी बनकर मंदा की राह देखता रहता है।

5.8 'गोविन्दसिंह' :-

'इदन्नमम' में गोविन्दसिंह अवसरवादी स्वार्थी, धोखाधड़ी करनेवाला संयुक्त परिवार को तोडनेवाला स्वार्थी इन्सान का प्रतिक है। श्यामली गाँव के दादापचमसिंह का भाई गोविन्दसिंह स्वार्थी, लालची है, अपने घर पनाह पाने आये बऊ और मंदा को दादापंचमसिंह का आश्रय देना उसे मंजूर नही है। मंदा को बचाने के लिए दादापंचमसिंह का केस में पैसे लगाना उसे मंजूर नही है-''दादा, मुकदमा का चस्का बुरा होता है। जुओ से भी बुरा। सट्टे से भी बढ़कर। बरबादी न कराओ घर की।''[1] दादा पंचमसिंह की बऊ की सहाय्यता करना देखकर लोभी गोविन्दसिंह अपनी चाल चल देता है, वह मकरंद और मंदा की सगाई करने की बात दादा पंचमसिंह से करता है जिससे मंदा की जायदाद उसके घर में आ जाये। परंतु आगे चलकर अपने ही पोते से सगाई करके जायदाद हड़पने का आरोप दादापंचमसिंह पर लगाकर घर में बवाल निर्माण करता है-''और यह भी सुन लो कि घर भर का पइसा लगा है भइया। दादा अकेले का तो था नहीं। सो किस-किससे आँखे चुरायेंगे। हिस्सा तो सबका करेंगे। तुम सोच रहे होंगे, अकेले मकरन्द को मिल जायेगा सकड़ौ बिघों रकबा। सो सपने में भी मत सोचना।''[2] संपत्ती के लिए सयुक्त परिवार को तोडनेवाला गोविन्दसिंह आखिर कपट करके बऊ को अपाहिज दिखलाकर असकी जमीन अपने नाम कर के श्यामली के क्रैशर के ठेकेदार अभिलाखसिंह को जमीन बेच देता है।

इस तरह संयुक्त परिवारों में स्वार्थ, इर्ष्या और महत्वकांक्षा के कारण एक-दूसरे आरोप-प्रत्यारोप लगाते हुये परिवार का विघटन होना आज ग्रामीण जीवन में आम घटना जैसे बनता जा रहा है। गोविन्दसिंह स्वार्थ के कारण ही न्यायप्रिय, दादापंचमसिंह जैसे भाई की बाते नही मानता और आखिर संपत्ती के लिये बऊ से बेमानी करके जमीन हड़प लेता है। इस तरह ग्रामीण लोग अपने ही परिवार में स्वार्थ के कारण एक-दूसरे के विरुध्द खड़े हो रहे है जिसका उदाहरण 'गोविन्दसिंह' यह पात्र है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ.100.

2) वही पृ. 133.

5.9 अभिलाखसिंह :-

'इदन्नमम' में अभिलाखसिंह 'शोषण' का प्रतिक है। आजादी के बाद विकास निगम के अंदर 'सोनपुरा' में क्रैशर लगाये जाते है। और गांव में परंपरा से चली आई रोटी की व्यवस्था टूटकर बिखर जाती है। गाँव के छोटे-मोटे उद्योग ध्वस्त हो जाते है। 'सोनपुरा' गाँव खानाबदोश हो जाता है। क्रैशर का ठेकेदार अभिलाखसिंह गाँववालों को मजदूरी नही देता, देता भी है तो शोषण के पाटों मे पिसता रहता है। 'मंदा' के रुप में 'सोनपुरा' गाँव में अभिलाख जैसे शोषण के विरुध्द क्रांती खड़ी हो जाती है। जिससे अभिलाखसिंह जैसा शोषक बौखला जाता है- "अभिलाख पहाड़ पर दहाड़ रहा था कि वो बीजुरी कागों को हंस बनाना चाहती है, सो आसान नहीं है। हमारे क्षेत्र मे भी पहाड के तमाम ठेकेदार है। खियाराम सिंधी को छठी का दूध याद दिला देंगे। साला नई-नई विद्या पढ़ाता है रोज-रोज। ट्रेक्टर -ट्रक के नीचे बात नहीं करता। डबल प्लांट क्या लगा लिया है, अपने समान गिन नहीं रहा किसी को।"[1] अभिलाखसिंह जैसे शोषक गाँव का संघटन तोडने का हर तरह से प्रयास करते है वह क्रैशर के मजदूरों को डरा-धमकाता रहता है। अभिलाखसिंह जैसे शोषक के आत्याचर का वर्णन राऊत मजदूरीन करती है- "जिज्जि, कुछ भी खराब होता रहे, काम तो हर हालियत में करना परेगा। नातर खायेंगे कहाँ से? मालिक जी जब जास्ती काम करा लेते है तो बस इनका हाल ऐसा ही देख लो।"[2] अभिलाखसिंह पूँजीवादी संस्कृति का प्रतिनिधी पात्र है। रातदिन अपने मजदूरों से काम करवा लेता हैं उपर से मजदूरों के स्त्रियों पर अत्याचार करता है, उन्हें शहर के बाजार में बेच आता है। अंत मे तो अभिलाखसिंह जैसा शोषक अपने लड़के के लिए ब्याह जानेवाली सगुणा पर अत्याचार करता है। फलस्वरुप बलात्कारी अभिलाखसिंह की हत्या सगुणा कर देती है और खुद आत्महत्या कर लेती है। इस तरह अभिलाखसिंह 'इदन्नमम' में परंपरा से प्रचलित भारतीय समाज के सामंतशाही का प्रतिक है जो आज के जमाने में ठेकेदार, पूँजीवादी, कारखानदार, मील मालिक बनकर स्वतंत्रता के बाद भी ग्रामीण भारतीयों का शोषण कर रहे है। अभिलाखसिंह के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने ठेकदारों से ग्रामीण लोगों के शोषण का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ. 213.

2) वही पृ. 227.

5.10 'जगेसर' :-

'इदन्नमम' उपन्यास का 'जगेसर' वह पात्र है जो शुरु से अंत तक प्रतिनायक के रुप में आता है। जगेसर के घृणित कृत्यो के कारण गाँववालों की जिस प्रकार प्रताड़ना पाता है, उसी प्रकार पाठक के मन में भी उसके प्रति घृणा ही निर्माण होती है। शराबी और कामुक जगेसर सोनपुरा गाँववालों के विरुध्द जाकर क्रैशर मालिक अभिलाख की मदत करता रहता है। मंदा की माँ 'प्रेम' को लेकर गाँव में बवाल मचाने में जगेसर आगे है। बहु और मंदा के सोनपुरा लौटने पर गाँववालों के लिये कार्य करनेवाली मंदा के चरित्र को बदनाम करने में अभिलाखसिंह को साथ देता रहता है। अपने घर आनेवाली अपने लड़की के उम्रवाली 'अहिल्या' को फुसलाकर उससे शादी करता है और जब अहिल्या के शरीर पर कोड़ निकल आता है तब उसे छोडकर घर वापिस आ जाता है। शराब और अहिल्या के लिए अपनी जमीन तक अभिलाख को बेच डालता है और उसके पैसे पाने के लिये अपनी लडकी सगुणा की शादी अभिलाखसिंह के लडके से तय करता है परंतु अंत मे अभिलाखसिंह जैसा शोषक अपने मित्र जगेसर की लडकी सगुणा पर बलात्कार करता है। जगेसर की पत्नी भी उससे घृणा करती है - ''साँची कहते है; हम इस आदमी के होने से तो हम विधवा राँड हो जाते तब अच्छा होता।''[1] अपने कुकर्म से घर-परिवार, गाँववालों से घृणा पानेवाला जगेसर स्वार्थ के लिये अंत तक पाप का भागी बनकर रहता है और अपने ही घर को बरबाद करता रहता है।

5.11 'टीकमसिंह' :-

'इदन्नमम' में 'टीकमसिंह' मार्क्सवादी विचारों से प्रेरित एक क्रांतीकारी व्यक्तित्व है। स्वतंत्रता के बाद सरकार विकास योजनाओं के अंतर्गत टीकमसिंह के गाँव 'पारीछा' में जलसिंचन योजना का 'पारीछा' थर्मल प्लांट लगा रही है। जिस कारण गांव में नहर (बाँध) योजना आ जाती है और गाँववालों को विस्थापित होने के लिये कहा जाता है। तब गाँव के प्रधान टिकमसिंह अपने गाँव-अनगाँव के लोगों के जीवन के बारे में सोचते है। अपनी जमीन से उखड़कर फेके जाने पर हम अपना जीवन नये से बसा पायेंगे? इस विचार से टीकमसिंह गांववालों को अपने गाँव से विस्थापित न होने के लिये जागृत करते है। वह

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ. 327.

सरकार के विरुध्द जंग छेड देते है-"केस दायर करते है, स्टे ऑर्डर भी लाते है, सरकार के विरुध्द की केस हार जाते है परंतु हिम्मत नही हारते।"

"परंन्तु वे केस ही तो हारे थे, हिम्मत नहीं हारे। गिरकर रोष भरे सिपाही की तरह दूने साहस से फिर उठे। और, आक्रोश में आकर ईंटे, सीमेंट, लोहा, गिट्टी रातों-रात नदी में पटकवा दिया। पटकवाते ही गये। फिर तो रोज का नियम बन गया। दिन में जितना आता, रात के समय सब जल समाधि ले जाता।"[1]

आखिर सरकार झुक गयी और टीकमसिंह के शर्तों के अनुसार काम शुरु हुआ।

"जमीन बिकी, लेकिन चौगुनी कींमत पर।"

"रोजगार मिला तो पारीछा थर्मल प्लांट के आस-पास बसे गावों के निवासियों को।

"भराई-दुलाई में प्रभावित क्षेत्र के ट्रेक्टर लगाये गये।"

"फुटकर मजदूरी में उन्हीं गाँवों के लोगों का वरीयता दी गयी, जो भुक्त भोगी थे।"

"यहाँ तक कि इंजीनियर्स की रिहायशी कॉलोनी की रंगाई-पुताई का काम भी उन्हीं गावों के निवासियों को मिला। दूध की सप्लाई तक वहीं के पशुओं से होने लगी।"[2] टीकमसिंह जैसा अनपढ़ प्रधान अपने गाँव के छात्रों से अखबार पढ़वाकर देश-विदेशों की खबरे सुनकर अपने गाँव के विकास की बाते दिन-रात सोचता था।

आगे टीकमसिंह कोयले के महाराज बनकर मठ मे रहने लगता है और अपने गाँव का नेतृत्व नवयुवकों के हाथ सौंप देता है।

'सोनपुरा' गाँव के मंदा से उसके गाँव की स्थिती जानकर वही टीकमसिंह जो कोयले के महाराज बने है; मंदा को गाँव परिवर्तन का संकल्प उठाकर अपने गाँववालों को खानाबदोश होने से बचाने का मूल मंत्र देते है। टीकमसिंह से ही प्रेरणा लेकर 'इदन्नमम' की नायिका मंदा अपने गाँववालों का संगठन बनाकर गाँव के लोगों को रोजी-रोटी प्राप्त करा देती है।

राऊत मजदूरों और अभिलाखसिंह के मारपीट में जेल हुये बचाने गये मंदा को पुलिस हिरासत में लेती है तब उसे छुडाने गये टीकमसिंह को वहाँ का दरोगा पहचान लेता है। तब

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ.- 189
2) वही पृ. 190.

टीकमसिंह अपनी असलियत बताते है- ''दीवानजी, मैं टीकमसिंह हूँ। नाटता नहीं इस बात को, न छुपाता। सच से कैसा परदा? साधु होने का पिरयोजन भी ढोंग-पाखंड नहीं। सब समय के तकाजे हैं। वह समय था- लड़ने का, हक्क माँगने का और फिर समय आया आनेवाली पीढ़ी के हाथ उस विरासत को सौंपने का। उस धरती के वारिसों को उनकी अमानत सँभालने का। आखिर कब तक एक ही आदमी सत्ता पकड़े बैठा रहेगा? अच्छा किया दिवानजी, आपने ही खोल दी सारी बात। मेरे मन का बोझ उतर गया। रास्ता सुगम हो गया, नहीं तो इन लोगों के विश्वास को मैं तोड पाता भी कि नही?''[1]

टीकमसिंह एक सच्चे देशभक्त है जो अपने गाँव समाज से प्यार करनेवाले किसानों की जिंदगी का आदर करनेवाले इन्सान है जिस कारण किसान की टूटती जिंदगी वह देख नही पाते है और भारत देश के किसानों की किसानी आबाद रखने के लिये वह अपना जीवन लगाते है। गाँववालों को विस्थापित होने से बचानेवाले प्रधान टीकमसिंह सत्ता से भी मोह नही रखते जो आज के बुजुर्ग राजनीतिक लोगो के लिये आदर्श उदाहरण है जो सत्ता नवयुवकों के हाथ सोंपकर साधु बनकर राजकीय नेता लोंगों को मार्गदर्शन करते रहते है। देश के, गाँव-समाज के विकास के लिये अपना जीवन समर्पित करके 'इदन्नमम' यह मूलमंत्र अपनाते है।

5.12 'डॉ. इन्द्रनील' :-

'इदन्नमम' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने पर्वत-पहाड अँचल के इलाकों में ग्रामीण लोगों के स्वास्थ समस्या का चित्रण किया है। पहाड़ी इलाके में रहने के कारण दूर-दूराज के गांवों मे अस्पताल की सुविधा नही होती है हरी-बीमारी के लिये गाँववालों को शहर-कस्बे की ओर भागना पडता है, नही तो जान गवानी पड़ती है। क्यों कि, पहाड़ी इलाके में आकार कोई डॉक्टर अपनी सेवा देने के लिये तैयार नहीं होता है। 'सोनपुरा' गाँव के प्रधान महेंदर ने बडे प्रयत्न से अपने गाँव में अस्पताल शुरु किया था, परंतु गंदी राजनिती के कारण अस्पताल के उद्‌घाटन के दिन उसकी हत्या हो जाती है और अस्पताल का सपना अधुरा रह जाता है। मंदा अपने पिताजी का अधुरा सपना पुरा करना चाहती है। क्षेत्र के मंत्री राजासाहब जब वोट माँगने के लिये आते है, तब मंदा गाँव की असुविधाओं से मंत्री को

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ. 290

परिचित कराती है और कहती है जब तक गाँव के अस्पताल में डॉक्टर नही आयेगा, गाँव मे सुविधाओंका निर्माण नही किया जायेगा तब तक यहाँ के लोग आपको वोट नही देंगे। मंत्री राजासाब चुनाव को ध्यान में रखकर सोनपुरा गाँव में डॉ. इन्द्रनील को भेजते है। डॉ. इन्द्रनील का आना गाँववालो के लिये मसीहा से कम नही ''उसने देखा गाँव के लोग चले आ रहे है। लो, अब जिसको खबर लगेगी, बावरे की तरह इधर को ही भागेगा, वह उसे ही थामे। जिसके सिर पर डलिया-पिरिया है, वह उसे सिर पर धरे। क्या आदमी, क्या जनी, बस चली आ रही हैं, इधर ही।''[1] स्वतंत्रा के साठ साल बाद भी भारतीय गावों में आरोग्य सुविधाएँ उपलब्ध नही है, अस्पताल है, तो डॉक्टर नही, डॉक्टर आये तो गाँव मे ठहरने के लिए तैयार नहीं है। गाँव के लोग आज भी हरी बीमारी को लेकर जीते है कोई बड़ी बीमारी हो तो शहर जाना पड़ता है।

सोनपुरा में आये डॉक्टर 'इन्द्रनील' मन लगाकर गाँववालों की सेवा करते है। गाँववाले भी उनका आदर करते है। आसपास के गाँवो मे डॉक्टर 'इन्द्रनील' आदरणीय, पूजनीय और आत्मीय हो जाते है। डॉ. इन्द्रनील सहनशील स्वभाव के है, गाँव के लोगों से हेल-मेल रखनेवाले चुस्त और हँसमुख है। गाँव का वातावरण साफ-सुथरा रहने के लिये गाँववालों में जागृती निर्माण करते है। क्रैशर के कारण गाँव के लोगों को फेफडे की बीमारी से झुझना पड रहा है, यह देखकर क्रैशर पर फव्वारे लगाने की बात सरकार दरबार में करने की बात मंदा से करते है। आत्मीयता का रिश्ता जोडे डॉ. इन्द्रनील गाँववाले अपना समझने लगे थे परंतु एक दिन डॉ. इन्द्रनील भी गाँव छोडकर चले जाते है। क्यो कि, आगे का सी.एम.ओ. के पद के लालच में डॉ. इन्द्रनील राजासाब के कहने पर चुनाव तक ही सोनपुरा आये थे। डॉ. इन्द्रनील के जाने पर सोनपुरा का अस्पताल का सपना अधुरा रह जाता है। डॉ. वसंत सुर्वे जी कहते है - ''ग्रामों में सरकारी अस्पतालों की व्यवस्था पर सामान्य लोगों का अविश्वास रहा है। क्यों कि इलाज की आवश्यक सुविधाएँ वहाँ मौजूद नहीं होती। दवा-दारु के अभाव में ग्रामीणों का जीवन दूभर बनता है।''[2] डॉ. इन्द्रनील के जाने के बाद कम्पाऊंडर रासबिहारी अस्पताल संभालता है। इस तरह शहर के उच्चशीक्षित नवयुवा डॉक्टर आज गाँव

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2006, पृ. 316.
2) डॉ. वसंत सुर्वे, 'आपात्कालोत्तर हिंदी ग्रामांचलिक उपन्यासों की मीमांसा,' साहित्य सागर प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2007. पृ. 237.

में आकर अपनी सेवा देने के लिये तैयार नही है बल्की पद, प्रतिष्ठा पैसा प्राप्त करने के लिये आज के नवयुवक एक तो शहर-कस्बे या विदेशों की ओर भाग रहे है इस सत्य को मैत्रेयी पुष्पा ने डॉ. इन्द्रनील पात्र के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

5.13 'डबलबब्बा' :-

'डबलबब्बा' 'इदन्नमम' का छोटा सा परंतु ध्यान में रहनेवाला पात्र है। 'बुंदेलखण्ड' अँचल की विशेषता रही है कि यह इलाका डाकू-लूटेरों का इलाका इस नाम से प्रसिद्ध है। डाकू 'डबलबब्बा' स्वतंत्रता के बाद अपने डाकूपन को त्यागकर 'श्यामली' गाँव के प्रधान दादा पंचमसिंह के घर में काम करते हुए जीवन बीता रहे है। 'डबलबब्बा' एक जमाने में डाकू रहे थे परंतु उनके अंदर का इन्सान जागृत था। मंदा और बऊ को ओरछा की गढ़ी में ले जानेवाला डबलबब्बा उनका ख्याल रखता है। कुसुमा भाभी जब छोटा बच्चा लेकर द्वार पर खड़ी हो जाती है तब दादापंचमसिंह का सारा परिवार उसके खिलाफ खड़ा हो जाता है तब एक पिता की तरह 'डबलबब्बा' कुसुमाभाभी की सहाय्यता करता है। मैत्रेयी पुष्पा ने डबलबब्बा के माध्यम से डाकू-चोर-लूटरों में भी इन्सानियत वास करती है इसका श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष :-

'इदन्नमम' मे चित्रित पुरुष पात्र दो पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र है। पाठकों कों पर सबसे अधिक प्रभाव दादापंचमसिंह और कोयले के महाराज टीकमसिंह इस पहले पीढ़ी के पात्रों का छाया रहता है। क्यों कि दादापंचमसिंह और टीकमसिंह स्वतंन्त्रता संग्राम में हिस्सा लेने वाले, गांधीवादी विचार के पात्र है जो स्वतंत्र भारत के खुशियाली का स्वप्न देखते हुये अपना जीवन गाँव-समाज के लिये समर्पित करते है। तो दूसरी तरफ आधुनिक युग के भौतिकवादी जीवन से प्रभावित होकर स्वार्थी, लालची बने, गोविन्दसिंह, अभिलाखसिंह, जगेसर जैसे खलनायक पात्र है जो अपने कुकर्म से आधुनिक समाज से धोकाधड़ी करनेवाले पात्रों को प्रस्तुत करते है। तो दुसरी तरफ मकरन्द, डॉ. इन्द्रनील जैसे नवयुवा है जो अपनी शिक्षा का उपयोग करते हुये गाँव-समाज मे बदलाव लाने की इच्छा लेकर कार्यरत रहना चाहते है। इस तरह मैत्रेयी ने हर एक पीढ़ी का पात्र लेकर भारतीय समाज के बदलते जीवन को चित्रित करने में पात्रों की साहाय्यता ली है।

इस तरह 'इदन्नमम' उपन्यास में उपर्युक्त मुख्यत: चित्रित स्त्री और पुरुष पात्रों के साथ-साथ गणपत, महेंदर, प्रधानकाका, द्वारिकाकाका, पप्पू, रतनयादव, अमरसिंह, मोदी लल्ला, मिठू बिसौर, चीफ अन्वरसाब, यशपाल, गोविन्दकाका की पत्नी, कक्को, अन्वरीबुआ आदि पात्र पाठक के मनमस्तिष्क पर अपना प्रभाव छोडते है। अन्य छोटे-मोटे पात्रों के होते हुए भी मंदा इस उपन्यास की नायिका है और बऊ, दादापंचमसिंह, गोविन्दसिंह, अभिलाखसिंह प्रमुख पात्र है।